ANUBHUTI (70th BPSC MAINS TEST SERIES)

Free Initiative by BPSC CONCEPT WALLAH

a) पटना कलम

पटना कलम (जिसे पटना स्कूल ऑफ पेंटिंग भी कहा जाता है)

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- यह प्रश्न आपसे निम्नलिखित पहलुओं पर विश्लेषण की अपेक्षा करता है:

a) पटना कलम की उत्पत्ति, विकास और विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

b) भारतीय कला के समृद्ध इतिहास में इसका महत्व,विशेष रूप से मुगल और क्षेत्रीय शैलियों के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट कीजिए।

c) उपनिवेशकालीन और प्रारंभिक आधुनिक बिहार में इसकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता, विषयवस्तु और विरासत का मूल्यांकन कीजिए।

2. परिचय/भूमिका और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय/भूमिका में लिखें:

- पटना कलम को एक क्षेत्रीय चित्रकला शैली के रूप में परिभाषित कीजिए, जो मुगल लघु चित्रकला से विकसित हुई थी।
- इसकी उत्पत्ति 18वीं शताब्दी में बिहार में हुई थी और यह प्रवासी मुगल कलाकारों से जुड़ी थी।

निष्कर्ष में लिखें:

- पटना कलम का अद्वितीय योगदान लोक यथार्थवाद, स्थानीय संस्कृति और सामाजिक दस्तावेज़ीकरण में उल्लेख कीजिए।
- फोटोग्राफी के आगमन के बाद इसके पतन अथवा धीरे-धीरे प्रचलन से बाहर हो जाने का ज़िक्र कीजिए, साथ ही यह भी बताएं कि आज भी किस प्रकार यह स्थानीय कलात्मक अभिव्यक्ति के अध्ययन में प्रासंगिक है।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. उत्पत्ति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

- यह चित्रकला 18वीं सदी के अंत से 19वीं सदी की शुरुआत के बीच पटना, बिहार में उभरी।
- इसकी जड़ें मुगल चित्रकला परंपरा में थीं और इसे मुगल साम्राज्य के पतन के बाद प्रवास करने वाले कलाकारों ने आगे बढ़ाया।
- इसे स्थानीय ज़मींदारों, ब्रिटिश अधिकारियों और व्यापारियों का संरक्षण मिला।

BPSC CONCEPT WALLAH

B. शैली और विशेषताएँ:

- कागज़ और अभ्रक (mica) पर जलरंग का उपयोग।
- शाही दरबार की बजाय बाज़ार आधारित विषय — इसकी विशेषता आम जनजीवन पर केंद्रित चित्रण में है।
- विषयों में दैनिक जीवन, त्योहार, व्यवसाय, पेशे, सड़क के दृश्य और स्थानीय परिदृश्य शामिल थे।

C. प्रमुख कलाकार और संरक्षक:

- सेवक राम, ईश्वरी प्रसाद, जैराम दास, फकीर चंद जैसे प्रमुख कलाकार।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी और स्थानीय अमीर संरक्षक थे।

D. महत्व और योगदान:

- इसने औपनिवेशिक बिहार के सामाजिक-आर्थिक जीवन का दस्तावेजीकरण किया।
- यह भारतीय कला में नगरीय यथार्थवाद के प्रारंभिक रूपों में से एक था।
- इसने शास्त्रीय लघु चित्रकला और आधुनिक भारतीय चित्रकला के बीच संक्रमण काल में अहम भूमिका निभाई।

E. पतन और विरासत:

- फोटोग्राफी और मुद्रण तकनीक के आगमन से इसका पतन हुआ।
- आज इसके चित्र पटना म्यूज़ियम, विक्टोरिया एंड अल्बर्ट म्यूज़ियम (लंदन), और ब्रिटिश म्यूज़ियम में संरक्षित हैं।
- यह बिहार की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है और भारतीय कला इतिहास में अध्ययन का विषय है।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- मुगल लघु चित्रकला
- नगरीय लोक कला
- अभ्रक पर वॉटर कलर
- भारतीय चित्रकला में यथार्थवाद
- सामाजिक दस्तावेज़ीकरण
- स्थानीय सौंदर्यशास्त्र
- ब्रिटिश संरक्षण
- पटना शैली/स्कूल
- बाज़ार के दृश्य
- उपनिवेशकालीन कला में परिवर्तन

71st BPSC Foundation Batch
BPSC CONCEPT WALLAH
Complete Coverage of All Stages
Prelims | Mains | Interview
- Exclusive Mentorship
- Regular Feedback for improvement
- Answer writing Practice
- Bilingual Classes
- Easy Insta llment Plans Available
- BCW Goodies
JOIN NOW
BCW website www.bpscconceptwallah.com
Call for information 9341212632 7667229306 9142695557 9113430228

BPSC CONCEPT WALLAH

5. अन्य महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- यदि संभव हो तो कुछ असली चित्रों का उदाहरण दें (जैसे: "चूड़ी बेचने वाली", "फल विक्रेता")।
- इस शैली की तुलना अन्य प्रमुख शैलियों से करें (जैसे मुगल, पहाड़ी और राजपूत शैली)।
- संतुलित दृष्टिकोण रखें — उपलब्धियों और पराभव/पतन दोनों का ज़िक्र करें।
- यह बताएं कि यह शुद्ध रूप से बिहार में पल्लवित शैली है, जो साम्राज्यिक सत्ता की बजाय स्थानीय संस्कृति को दर्शाती है।
- लंबे उत्तर में स्पष्टता के लिए शीर्षक और उपशीर्षकों का प्रयोग करें (विशेष रूप से 38 अंकों के प्रश्नों में)।

विषय: मौर्यकालीन कला और स्थापत्य/वास्तुकला

1. प्रश्न की मुख्य अपेक्षा:

- मौर्य काल (322–185 ईसा पूर्व) के दौरान कला और वास्तुकला के विकास का वर्णन और मूल्यांकन कीजिए।
- इसकी विशिष्ट विशेषताओं, प्रयुक्त सामग्रियों और प्रमुख योगदानों पर चर्चा कीजिए।
- भारतीय कला के विकास में इसका महत्व बताइए, जिसमें शाही और लोक परंपराएँ दोनों शामिल हैं।
- यह भी बताइए कि धर्म और राज्य के संरक्षण ने मौर्यकालीन कला को किस प्रकार प्रभावित किया।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- मौर्य काल को भारत में भव्य कला और वास्तुकला की शुरुआत के रूप में देखा जाता है।
- यह स्थानीय परंपरा और फारसी-अकमेनिड प्रभावों का समन्वय था, जिसे विशेष रूप से सम्राट अशोक के संरक्षण में प्रोत्साहन मिला।

निष्कर्ष में लिखें:

- मौर्य कला के स्थायी प्रभाव जैसे पालिश किया गया पत्थर, अशोक स्तंभ, और प्रारंभिक बौद्ध वास्तुकला के तत्वों को संक्षेप में बताएं।
- यह भी उल्लेख करें कि मौर्यकालीन कला ने आगे आने वाली कलात्मक परंपराओं — जैसे गुप्त और उत्तर-मौर्यकालीन शैलियों — की नींव रखी।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. राजकीय कला (राज्य-प्रायोजित):

- **अशोक स्तंभ:** चुनार बलुआ पत्थर से बने, अत्यंत पालिश किए गए, एकाश्म/एकल पत्थर वाले स्तंभ; इनके शीर्ष पर पशु आकृतियाँ होती थीं, विशेष रूप से सारनाथ का सिंह स्तंभ (भारत का राष्ट्रीय प्रतीक)।

BPSC CONCEPT WALLAH

- **शिलालेख:** पूरे भारत में फैले हुए; इनमें अशोक के 'धम्म' संदेश उत्कीर्ण हैं।
- **महल और स्तंभों वाला सभागार:** मेगस्थनीज़ ने पाटलिपुत्र के महलों को भव्य बताया; इनका स्थापत्य अकमेनिड और यूनानी शैली से प्रेरित था।

B. लोक कला (जन परंपराएँ):

- **यक्ष और यक्षिणी मूर्तियाँ:** ये प्रारंभिक जीवन-आकार की पत्थर की मूर्तियाँ थीं, जो संतति/प्रजनन देवताओं को दर्शाती थीं।
- **टेराकोटा की मूर्तियाँ:** ग्रामीण क्षेत्रों में उपयोग की जाती थीं।

C. स्तूप और धार्मिक तत्वों से युक्त स्थापत्य/वास्तुकला:

- साँची और भरहुत के प्रारंभिक स्तूप मूलतःमौर्यकाल के थे।
- अशोक ने बौद्ध अवशेषों को संरक्षित करने के लिए 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया था।

D. तकनीक और प्रयुक्त सामग्री:

- बलुआ पत्थर पर उच्च गुणवत्ता की पालिश (मौर्यकालीन पॉलिशदार)।
- चुनार बलुआ पत्थर, लकड़ी और ईंट का प्रयोग।
- विशाल आकार और सममितीय योजना।

E. विरासत और प्रभाव:

- मौर्य कला ने भारत में राजकीय कला की परंपरा की शुरुआत की।
- इसने शुंग, गुप्त और बौद्ध गुहा/गुफा स्थापत्य जैसे उत्तरवर्ती/बाद की कला परंपराओं को प्रभावित किया।
- यह भारतीय अध्यात्म की राज्य-प्रायोजित दृश्यात्मक अभिव्यक्ति का पहला उदाहरण था।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- मौर्य कालीन पालिश विधा
- एकाश्म/एकल-शिला स्तंभ
- सारनाथ का सिंह स्तंभ
- अशोक का धम्म
- अकमेनिड प्रभाव
- यक्ष-यक्षिणी
- टेराकोटा मूर्तियाँ
- मेगस्थनीज़ की इंडिका

BPSC CONCEPT WALLAH

● प्रारंभिक बौद्ध स्थापत्य/वास्तुकला

● पाटलिपुत्र का स्तंभों वाला सभागार

5. अन्य महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

● यदि संभव हो तो अशोक स्तंभ या सिंह स्तंभ के चित्र/रेखाचित्र शामिल करें।

● स्थल विशेष के नाम अवश्य जोड़ें (जैसे सारनाथ, लौरिया नंदनगढ़, रामपुरवा, साँची)।

● मौर्य वास्तुकला में धार्मिक और राजनीतिक प्रतीकों का ज़िक्र करें।

● लंबे उत्तर में शीर्षक और बुलेट पॉइंट्स का प्रयोग करें ताकि संरचना स्पष्ट रहे।

● बौद्ध-परंपरा के तत्वों के साथ-साथ लोक कला और स्थानीय देवताओं जैसे बौद्ध धर्म से इतर पहलुओं को भी नज़रअंदाज़ न करें।

BPSC CONCEPT WALLAH

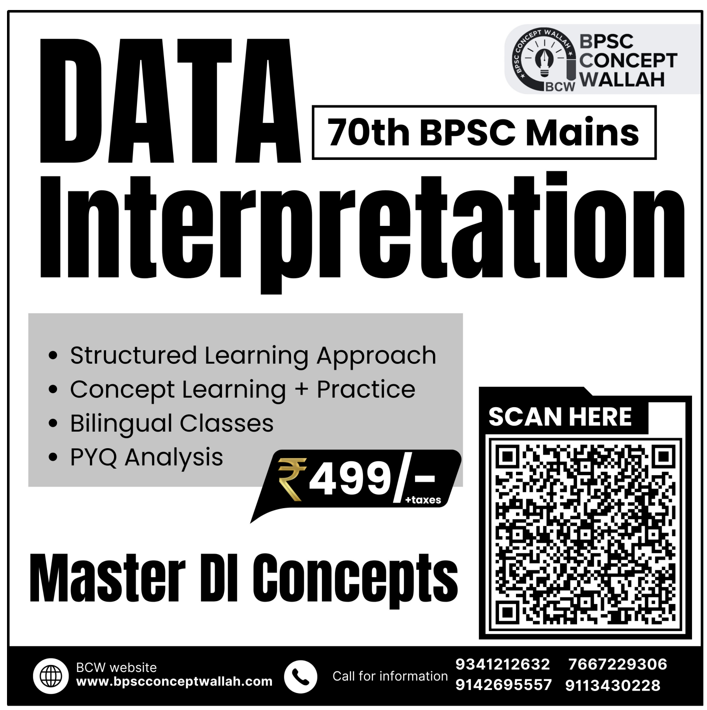

c) भारत शासन अधिनियम, 1935

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- भारत शासन अधिनियम, 1935 की विशेषताओं और प्रावधानों को समझाइए।
- इसके महत्व, कार्यान्वयन और सीमाओं का मूल्यांकन कीजिए।
- भारत के संवैधानिक विकास में इसकी भूमिका और यह कैसे भारतीय संविधान के प्रारूप के रूप में कार्य करता है, इसका विश्लेषण कीजिए।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- इस अधिनियम को ब्रिटिश संसद द्वारा भारत के संदर्भ में पारित की गई अब तक की सबसे व्यापक विधि के रूप में प्रस्तुत करें।
- यह उल्लेख करें कि यह साइमन कमीशन की सिफारिशों, गोलमेज सम्मेलनों और 1933 के श्वेत पत्र का परिणाम था।

निष्कर्ष में लिखें:

- इस अधिनियम को भारत की संवैधानिक विकास यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव के रूप में रेखांकित कीजिए, हालांकि इसमें कई खामियाँ थीं और कांग्रेस ने इसे अस्वीकार कर दिया था।
- यह स्पष्ट करें कि इस अधिनियम ने भारतीय संविधान (1950) के निर्माण में विशेष रूप से संघीय और प्रशासनिक ढांचे के संदर्भ में एक आधार तैयार किया।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उद्देश्य:

- **साइमन कमीशन (1927):** भारतीय नेताओं द्वारा विरोध और अस्वीकृति।
- **गोलमेज सम्मेलन (1930–32):** तीन बार आयोजित।
- **1933 का श्वेत पत्र और संयुक्त चयन समिति की रिपोर्ट:** जो अधिनियम का आधार बने।

B. अधिनियम के मुख्य प्रावधान:

- **संघीय ढाँचा:** अखिल भारतीय संघ का प्रस्ताव (प्रांतीय + देशी रियासतें)।
- **प्रांतीय स्वायत्तता:** प्रांतीय स्तर पर द्वैध शासन की समाप्ति।
- **केन्द्र में द्वैध शासन:** कार्यकारी शक्तियाँ गवर्नर जनरल और मंत्रियों के बीच बाँटी गईं।
- **द्विसदनीय विधायिका:** संघीय सभा और राज्यों की परिषद।

BPSC CONCEPT WALLAH

- **शक्तियों का विभाजन:** तीन सूची — संघीय, प्रांतीय और समवर्ती।
- **भारतीय रिज़र्व बैंक की स्थापना (1935)।**
- **संघीय न्यायालय की स्थापना (1937)।**
- **मताधिकार का विस्तार (सीमित रूप में, लेकिन बढ़ाया गया)।**

C. आलोचनाएँ और सीमाएँ:

- **केंद्र में उत्तरदायी सरकार नहीं:** गवर्नर जनरल के पास पूर्ण शक्तियाँ बनी रहीं।
- **संघीय योजना लागू नहीं हुई:** देशी रियासतों ने भाग नहीं लिया।
- **सीमित मताधिकार:** केवल 10–14% जनता को वोट का अधिकार।
- **आपातकालीन शक्तियाँ यथावत रहीं:** दमनकारी कानून यथावत कायम रहे।

D. महत्त्व और विरासत:

- यह अधिनियम 1947 तक ब्रिटिश भारत के संवैधानिक ढांचे का आधार बना रहा।
- भारतीय संविधान की कई विशेषताओं का प्रारूप/खाका बना (जैसे संघवाद, अखिल भारतीय सेवाएँ, तीन सूची)।
- यह दिखाता है कि ब्रिटिश शासक सत्ता के वास्तविक हस्तांतरण को लेकर अभी भी अनिच्छुक थे।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- अखिल भारतीय संघ
- प्रांतीय स्वायत्तता
- द्वैध शासन
- साइमन कमीशन
- गोलमेज सम्मेलन
- श्वेत पत्र (1933)
- संघीय न्यायालय (1937)
- भारतीय रिज़र्व बैंक (1935)
- सीमित मताधिकार
- संवैधानिक निरंतरता

5. अन्य महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- 1919 के अधिनियम से तुलना करें ताकि प्रगति या ठहराव स्पष्ट हो सके।
- अधिनियम के प्रावधानों को तालिकाओं या बुलेट पॉइंट्स में रखें ताकि समय और स्थान की बचत हो।

BPSC CONCEPT WALLAH

- प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं के दृष्टिकोण शामिल करें:
  - कांग्रेस ने इसे पूर्ण स्वतंत्रता के प्रावधान के न होने के कारण अस्वीकार किया।
  - अंबेडकर ने इसे प्रशासनिक सुधारों की दृष्टि से आंशिक रूप से समर्थन दिया।
- यह भी उल्लेख कीजिए कि यह अधिनियम 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम तक लागू रहा।

d) विषय: मुंडा विद्रोह (उलगुलान आंदोलन)

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- मुंडा विद्रोह के कारणों, घटनाक्रम और परिणामों को स्पष्ट कीजिए।
- बिरसा मुंडा की भूमिका का विश्लेषण कीजिए और यह बताइए कि यह आंदोलन कैसे ब्रिटिश उपनिवेशवाद और सामंती शोषण के विरुद्ध आदिवासी प्रतिरोध का प्रतीक था।
- इस आंदोलन के ऐतिहासिक महत्व का भारत के स्वतंत्रता संग्राम और आदिवासी चेतना के व्यापक परिप्रेक्ष्य में आँकलन कीजिए ।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- 19वीं शताब्दी के अंत में छोटानागपुर क्षेत्र में आदिवासी असंतोष की संक्षिप्त चर्चा करें।
- बिरसा मुंडा को एक करिश्माई आदिवासी नेता के रूप में प्रस्तुत कीजिए, जिन्होंने ब्रिटिश शासन और शोषक बिचौलियों के विरुद्ध एक शक्तिशाली विद्रोह का नेतृत्व किया।

निष्कर्ष में लिखें:

- मुंडा विद्रोह को आदिवासी अस्मिता और अधिकारों के प्रतीक के रूप में मान्यता दें।
- यह स्पष्ट करें कि इसने आदिवासी समुदायों के बीच एकता की भावना पैदा की और भविष्य के आदिवासी आंदोलनों को प्रेरणा दी।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. पृष्ठभूमि और कारण:

- ज़मींदारी प्रथा और साहूकारों के आगमन के कारण भूमि से बेदखली।
- **दिकुओं** (बाहरी लोगों), साहूकारों, मिशनरियों और औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा शोषण।
- **खूंटकट्टी प्रणाली** (मुंडा समुदाय की पारंपरिक भूमि व्यवस्था) का विघटन।
- मिशनरियों द्वारा सांस्कृतिक और धार्मिक दमन।

B. बिरसा मुंडा की भूमिका:

- स्वयं को 'भगवान' और मुंडा समुदाय के 'मसीहा' के रूप में घोषित किया।
- धार्मिक सुधार और सामाजिक शुद्धता का संदेश दिया।
- मुंडाओं को ब्रिटिश अधिकारियों, मिशनरियों और ज़मींदारों के खिलाफ संगठित किया।

C. विद्रोह की प्रक्रिया (1899–1900):

- चर्चों, थाना चौकियों और ब्रिटिश समर्थकों पर हमलों से विद्रोह की शुरुआत।
- विद्रोह का केंद्र रांची, सिंहभूम और खूंटी क्षेत्र रहे।
- 1900 में बिरसा को गिरफ्तार कर लिया गया और जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

D. दमन और परिणाम:

- ब्रिटिशों द्वारा इस आंदोलन को बेरहमी से कुचल दिया गया।
- इसके परिणामस्वरूप **छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम** (1908) बना, जिसने आदिवासी भूमि को गैर-आदिवासियों को हस्तांतरित करने पर रोक लगाई।
- आदिवासी पहचान और प्रतिरोध चेतना को बल मिला।

E. ऐतिहासिक महत्त्व:

- पूर्वी भारत का पहला संगठित आदिवासी प्रतिरोध आंदोलन।
- बिरसा मुंडा एक लोकनायक और शहीद बनकर उभरे।
- इस आंदोलन ने भारत में आदिवासी अधिकारों के विमर्श की नींव रखी।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- **खूंटकट्टी प्रणाली**
- **दिकू (बाहरी लोग)**
- **उलगुलान (महाविद्रोह)**
- **भगत आंदोलन**
- **बिरसा मुंडा**
- **छोटानागपुर पठार**
- **आदिवासी अस्मिता**
- **छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम, 1908**

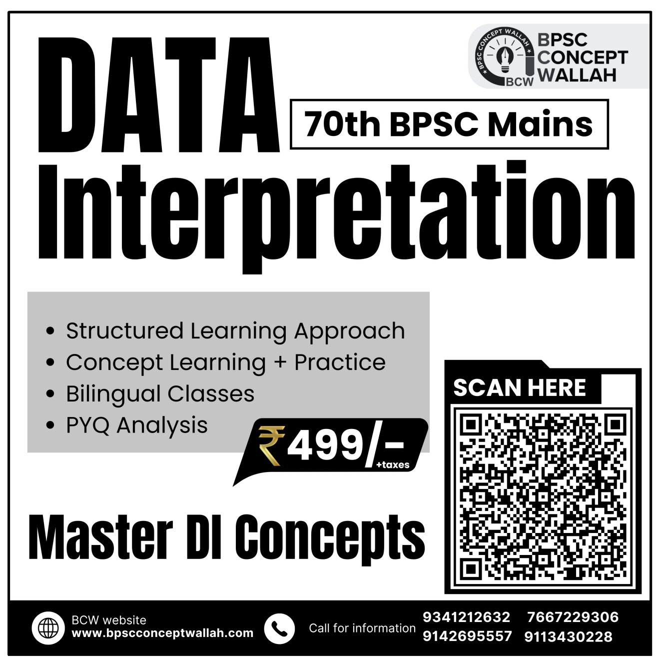

- **औपनिवेशिक कृषि नीतियाँ**
- **सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण**

5. अन्य महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- यदि संभव हो तो नक्शों के माध्यम से छोटानागपुर, रांची, खूंटी, सिंहभूम जैसे क्षेत्रों को दर्शाएँ।
- केवल घटनाओं का वर्णन न करें—कारणों और परिणामों का विश्लेषण भी करें।
- आदिवासी लोककथाओं या गीतों से उदाहरण दें (यदि उपलब्ध हों)।
- अन्य आदिवासी आंदोलनों (जैसे संथाल, कोल) से तुलना करें।
- उत्तर को शीर्षक और बुलेट पॉइंट्स के माध्यम से सुव्यवस्थित रखें।

e) विषय: जयप्रकाश नारायण (जेपी)

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से **भारत छोड़ो आंदोलन** में जयप्रकाश नारायण के योगदान को स्पष्ट कीजिए।
- स्वतंत्रता के बाद उनके वैचारिक सफर का मूल्यांकन करें, जिसमें **समाजवादी राजनीति**, **सर्वोदय आंदोलन** और **जेपी आंदोलन (1974–75)** शामिल हैं।
- उन्हें एक नैतिक मूल्यों वाले नेता, तानाशाही के विरोधी और **सम्पूर्ण क्रांति** के पक्षधर के रूप में प्रस्तुत करें।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- जेपी को एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करें — स्वतंत्रता सेनानी, समाजवादी विचारक और नैतिक-राजनीतिक मार्गदर्शक।
- उनका संबंध **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (1934)** से और स्वतंत्रता पूर्व व स्वतंत्रता पश्चात राजनीति परिदृश्य में उनकी उल्लेखनीय भूमिका का ज़िक्र करें।

निष्कर्ष में लिखें:

- जेपी को **सिद्धांत आधारित विरोध और जनशक्ति के प्रतीक** के रूप में पहचानें।
- यह स्पष्ट करें कि उनकी **दल-विहीन लोकतंत्र**, **विकेन्द्रीकरण**, और **नैतिक राजनीति** की अवधारणाएँ आज भी भारतीय लोकतंत्र में मार्गदर्शक स्तम्भ हैं।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

BPSC CONCEPT WALLAH

A. प्रारंभिक जीवन और वैचारिक पृष्ठभूमि:

- अमेरिका में अध्ययन के दौरान मार्क्सवाद और गांधीवाद से प्रभावित हुए।
- 1934 में **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी** के सह-संस्थापक बने।

B. स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:

- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942)** में अग्रणी भूमिका निभाई।
- भूमिगत संगठन बनाए, **आज़ाद दस्ते** का निर्माण किया, और **हजारीबाग जेल** से भाग निकले।
- जन-संगठन और क्रांतिकारी तरीकों के पक्षधर रहे।

C. स्वतंत्रता के बाद का योगदान:

1. समाजवादी राजनीति:

- कांग्रेस की केंद्रीकृत सत्ता का विरोध किया, **लोकतांत्रिक समाजवाद** के समर्थक बने।
- 1954 में सक्रिय राजनीति छोड़कर **सर्वोदय** और **भूदान आंदोलन** में विनोबा भावे के साथ जुड़े।

2. सम्पूर्ण क्रांति :

- **जेपी आंदोलन (1974–75)** का नेतृत्व किया, जो भ्रष्टाचार, कुशासन और तानाशाही के खिलाफ था।
- **आपातकाल (1975–77)** के दौरान इंदिरा गांधी के विरोध का नैतिक केंद्र बने।
- सम्पूर्ण क्रांति का आह्वान शिक्षा, राजनीति, अर्थव्यवस्था और नैतिकता में सुधार के लिए था।

D. विरासत और प्रासंगिकता:

- **"लोकनायक"** के रूप में सम्मानित।
- 1977 में पहली गैर-कांग्रेसी सरकार (जनता पार्टी) की विचारधारा के स्तंभ बने।
- **मूल्य-आधारित राजनीति**, **लोकतांत्रिक नैतिकता**, और **नीचे से ऊपर सत्ता-संरचना** के समर्थक।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- लोकनायक
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी
- भारत छोड़ो आंदोलन
- आज़ाद दस्ता
- हजारीबाग जेल से पलायन
- दल-विहीन/पार्टी-रहित लोकतंत्र
- सर्वोदय

BPSC CONCEPT WALLAH

- भूदान आंदोलन
- सम्पूर्ण क्रांति
- जेपी आंदोलन
- आपातकाल (1975–77)
- नैतिक मूल्यों वाली राजनीति

5. अन्य महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात की भूमिकाओं का संतुलित विश्लेषण करें।
- घटनाओं, स्थानों (जैसे बिहार, हजारीबाग), और आंदोलनों का उल्लेख करें।
- जेपी के विचारों के विकास को दिखाएं — क्रांतिकारी समाजवादी से गांधीवादी सुधारक तक।
- केवल घटनाओं की सूची न दें, बल्कि उनके **वैचारिक योगदान** और **नैतिक नेतृत्व** पर बल दें।
- उत्तर को शीर्षकों और बुलेट पॉइंट्स में स्पष्ट रूप से संरचित करें (विशेषकर 38 अंकों वाले प्रश्नों में)।

प्रश्न. उदारवादी चरण के महत्वपूर्ण नेताओं के योगदान का मूल्यांकन कीजिए जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखी। उनके तरीके और विचारधाराओं ने भारतीय राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण को किस प्रकार प्रभावित किया?

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- *मूल्यांकन करें* – इसका अर्थ है कि आपको **उदारवादी चरण के महत्वपूर्ण नेताओं** की **सकारात्मक उपलब्धियों** और **सीमाओं** – दोनों का आकलन करना होगा।
- दो भागों में उत्तर देना आवश्यक है:

a) स्वतंत्रता संग्राम की नींव रखने में उनका योगदान।

b) उनके तरीकों और विचारधारा ने प्रारंभिक राष्ट्रवादी चेतना को किस प्रकार दिशा दी।

● केवल घटनाओं का क्रम न बताएं; उनके **दीर्घकालिक प्रभाव** पर ध्यान केंद्रित करें।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

● नरमपंथी राष्ट्रवाद को 1885–1905 के कालखंड से जोड़ा जाता है।

● यह वह समय था जब 1857 के विद्रोह के बाद राष्ट्रवाद का पहला संगठित स्वरूप सामने आया और 1885 में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC)** की स्थापना हुई।

● यह वह दौर था जब राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश कानून और सुधारों के माध्यम से स्वतंत्रता की माँग उठाई।

निष्कर्ष में लिखें:

● **उदारवादी चरण के महत्वपूर्ण नेताओं** को **आधुनिक राजनीतिक चेतना के शिल्पकार** माना जाता है।

● हालाँकि बाद में उनकी विधियों व कार्य पद्धति की आलोचना हुई, लेकिन उन्होंने भारत में **संवैधानिक राजनीति** और **जनचेतना** के बीज बोए।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उदय:

● 1857 के बाद ब्रिटिश शासन की कठोरता और आर्थिक शोषण से जनता में असंतोष।

● 1885 में **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस** की स्थापना।

● समाज में सामाजिक और आर्थिक जागरूकता का उदय।

B. नरमपंथियों का योगदान:

● **राजनीतिक प्रशिक्षण और जागरूकता** – संविधानवाद, याचिका, बहस का उपयोग।

● **राष्ट्रीय एकता** – अखिल भारतीय दृष्टिकोण का विकास।

● **ब्रिटिश शासन की आर्थिक आलोचना – ड्रेन थ्योरी/धन का बहिर्गमन सिद्धान्त** (दादाभाई नौरोजी)।

● **प्रेस और शिक्षा** – समाचार पत्रों का प्रयोग, शैक्षणिक सुधार की माँग।

● **संस्थान निर्माण** – कांग्रेस में संवाद मंच की स्थापना।

C. उनके तरीके और विचारधारा:

● ब्रिटिश न्याय प्रणाली पर विश्वास।

BPSC CONCEPT WALLAH

- **प्रार्थना, याचिका और विरोध** के शांतिपूर्ण साधनों का प्रयोग।
- संविधान के माध्यम से क्रमिक सुधार में विश्वास।

D. विरासत और मूल्यांकन:

- उन्होंने **जन आंदोलन की नींव** रखी।
- **भविष्य के नेताओं** और आंदोलनों (जैसे उग्रपंथी और गांधीवादी) के लिए प्रेरणा बने।
- बाद में उन पर **मृदुता और अभिजात्यता** का आरोप लगा, लेकिन राजनीतिक शिक्षा और सामाजिककरण में उनकी भूमिका बुनियादी रही।

4. प्रमुख कीवर्ड/शब्दावली:

- संवैधानिक आंदोलन
- राजनीतिक आधुनिकता
- आर्थिक राष्ट्रवाद
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
- ड्रेन थ्योरी/धन का बहिर्गमन सिद्धान्त
- सेफ्टी-वाल्व सिद्धांत (आलोचनात्मक दृष्टिकोण से)
- प्रार्थना, याचिका, विरोध
- राजनीतिक शिक्षा
- राष्ट्रवादी चेतना का उदय
- क्रमिक बनाम क्रांतिकारी दृष्टिकोण

5. अन्य महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखें:

- उत्तर **विश्लेषणात्मक स्वरूप में लिखिए**, केवल घटनाओं का वर्णन न करें।
- प्रमुख नेताओं जैसे **दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, फिरोजशाह मेहता** का उदाहरण अवश्य दें।
- उत्तर को स्पष्टता के लिए **शीर्षकों और उपशीर्षकों** में बाँटें (विशेषकर 38 अंकों के प्रश्नों में)।
- सामान्य प्रशंसा से बचें — ठोस उपलब्धियों और सीमाओं दोनों को सामने रखें।
- **संतुलित आलोचना** शामिल करें जिससे गहराई का प्रदर्शन हो।

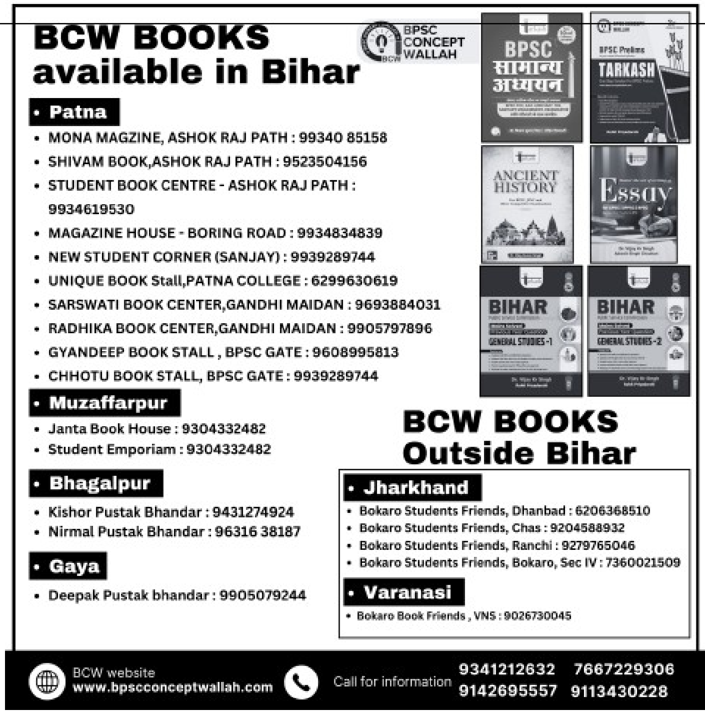

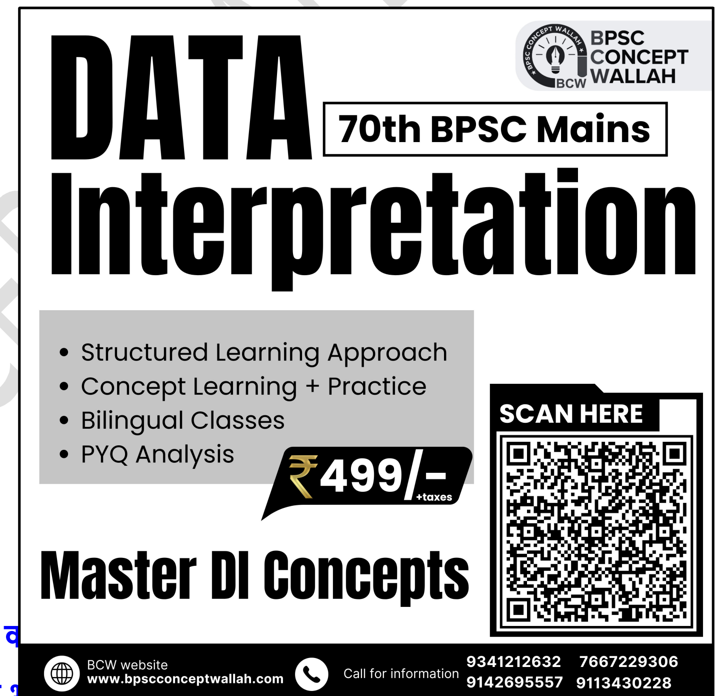

कीजिए और इसने स्वतंत्रता संग्राम को किस प्रकार प्रभावित किया, स्पष्ट कीजिए।

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

● यह प्रश्न आपसे दो पहलुओं पर प्रकाश डालने की अपेक्षा रखता है:

a) भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के संदर्भ में **बिहार की भूमिका** को विश्लेषित करें।

b) यह बताएं कि बिहार के आंदोलन ने **राष्ट्रीय आंदोलन को कैसे प्रभावित किया** और उसे किस प्रकार मजबूती दी।

● उत्तर में क्षेत्रीय योगदान की गहराई, संगठित प्रतिरोध, और आंदोलन की विशिष्टता पर बल देना आवश्यक है।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- 1942 का **भारत छोड़ो आंदोलन** गांधीजी द्वारा शुरू किया गया एक जन-आंदोलन था, जिसे अंग्रेजों से "करो या मरो" का आह्वान देकर आरंभ किया गया।
- भले ही राष्ट्रीय नेतृत्व आरंभ में गिरफ्तार कर लिया गया था, **बिहार** एक ऐसा क्षेत्र बनकर उभरा जहाँ **जन आंदोलन और भूमिगत संगठनों** ने आंदोलन को जीवित बनाए रखा।

निष्कर्ष में लिखें:

- बिहार की भूमिका ने यह साबित कर दिया कि **जन-आधारित, विकेन्द्रीकृत, और संगठित प्रतिरोध** भी नेतृत्वविहीन स्थिति में क्रांतिकारी हो सकता है।
- इसने राष्ट्रीय आंदोलन को **आत्मबल**, **जन-भागीदारी**, और **क्रांतिकारी दृष्टिकोण** प्रदान किया।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि:

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारत को बिना परामर्श के झोंकने पर असंतोष।
- **क्रिप्स मिशन की असफलता** ने आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की।
- 8 अगस्त 1942 को गांधीजी ने "करो या मरो" का नारा दिया।
- 9 अगस्त को राष्ट्रीय नेताओं की गिरफ्तारी।

B. बिहार में आंदोलन की विशेष भूमिका:

- **भूमिगत नेतृत्व** – **जयप्रकाश नारायण**, **योगेन्द्र शुक्ल** आदि ने **आज़ाद दस्ता** का गठन किया।
- **गोरिल्ला युद्ध और तोड़फोड़** – रेलवे पटरियाँ उखाड़ी गईं, थाना व सरकारी संस्थानों पर हमले।
- **छात्र और युवाओं की भागीदारी – 11 अगस्त 1942 को पटना सचिवालय पर झंडा फहराया गया**, जिसमें कई छात्र शहीद हुए।
- **महिलाओं की सक्रियता** – **तारा रानी श्रीवास्तव**, **सरस्वती देवी** जैसी महिलाओं की भागीदारी।
- **समांतर सरकारों का गठन** – गया जैसे स्थानों में अस्थायी जन-शासन की स्थापना।

C. प्रभाव और विरासत:

- बिहार में राजनीतिक चेतना का विस्तार।
- **क्षेत्रीय राष्ट्रवाद** को बल मिला, जिसने आंदोलन की जड़ों को और मजबूत किया।
- आंदोलन के **क्रांतिकारी और विकेन्द्रीकृत चरित्र** ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा दी।

BPSC CONCEPT WALLAH

4. प्रमुख कीवर्ड/शब्दावली:

- ऑपरेशन ज़ीरो आवर
- झंडा शहीद
- आज़ाद दस्ता
- गुरिल्ला प्रतिरोध
- समांतर सरकार
- विकेन्द्रीकृत आंदोलन
- भूमिगत नेटवर्क
- जन-भागीदारी
- जन-राष्ट्रवाद
- आंदोलन का उग्र रूपांतरण

5. अन्य महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखें:

- बिहार के विशिष्ट स्थानों का उल्लेख करें: **पटना, गया, जहानाबाद, हजारीबाग**।
- **दिनांक और घटनाओं** (जैसे 11 अगस्त को पटना में झंडा फहराना) का ज़िक्र अवश्य करें।
- **जेपी के भागने** और **गोरिल्ला रणनीति** में उनकी भूमिका को प्रमुखता दें।
- उत्तर को राष्ट्रीय आंदोलन से अलग न करें, बल्कि यह दर्शाएँ कि **बिहार ने राष्ट्र को रास्ता दिखाया**।

3.प्रश्न: "जयप्रकाश नारायण केवल एक क्रांतिकारी नहीं, बल्कि एक दूरदर्शी थे जिनके आदर्श व सिद्धांत पारंपरिक राजनीति से कहीं आगे थे।" स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भूमिका की विवेचना कीजिए तथा स्वतंत्रता के बाद के राजनीतिक विचारों और आंदोलनों में उनके योगदान का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए।

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- प्रश्न दो भागों में विभाजित है:

a) स्वतंत्रता आंदोलन में जयप्रकाश नारायण की भूमिका (विशेषकर भारत छोड़ो आंदोलन और भूमिगत गतिविधियाँ)।

b) स्वतंत्रता के बाद उनके राजनीतिक दर्शन और आंदोलनों (विशेषकर सम्पूर्ण क्रांति) का आलोचनात्मक मूल्यांकन।

- उत्तर में उनके **योगदानों के साथ-साथ सीमाओं** का भी निष्पक्ष विश्लेषण अपेक्षित है।

BPSC CONCEPT WALLAH

2. भूमिका और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

भूमिका में लिखें:

- जयप्रकाश नारायण को "**लोकनायक**" कहा जाता है – वे एक ऐसे नेता थे जिन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई, बल्कि स्वतंत्र भारत में नैतिक और वैचारिक राजनीति का भी मार्ग प्रशस्त किया।
- उनकी **दोहरी विरासत** – स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी और स्वतंत्रता के बाद वैकल्पिक राजनीति का नेतृत्व – उन्हें विशिष्ट बनाती है।

निष्कर्ष में लिखें:

- जेपी भारतीय राजनीति में **नैतिक बल** और वैचारिक स्पष्टता के प्रतीक बने।
- **लोकतांत्रिक समाजवाद**, **विकेन्द्रीकरण**, और **जनांदोलनों** के क्षेत्र में उनका योगदान आज भी **स्वच्छ और नैतिक सार्वजनिक जीवन** के प्रेरणास्रोत के रूप में स्थापित है।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. प्रारंभिक जीवन और वैचारिक आधार:

- अमेरिका में पढ़ाई के दौरान **मार्क्सवाद**, **समाजवाद**, और **गांधीवाद** से प्रभावित हुए।
- 1934 में **कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी** के सह-संस्थापक बने।

B. स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका:

- **नमक सत्याग्रह**, **भारत छोड़ो आंदोलन** में सक्रिय भागीदारी।
- भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व किया, **आज़ाद दस्ता** की स्थापना।
- **हजारीबाग जेल से भागे (1942)** और सशस्त्र प्रतिरोध को संगठित करते रहे।
- ब्रिटिश शासन के खिलाफ **क्रांतिकारी व वैचारिक प्रतिरोध** के केंद्र बने।

C. स्वतंत्रता के बाद का राजनीतिक दर्शन:

- कांग्रेस से मोहभंग; **दल-विहीन/पार्टी-रहित लोकतंत्र** की वकालत की।
- **सर्वोदय आंदोलन** और **विकेन्द्रीकरण** को अपनाया।
- 1970 के दशक में **भ्रष्टाचार और तानाशाही** के विरुद्ध **सम्पूर्ण क्रांति** का नेतृत्व किया।
- राजनीति के साथ-साथ **शिक्षा, अर्थव्यवस्था, प्रशासन और नैतिकता** में व्यापक बदलाव की माँग की।

D. विरासत और आलोचना:

- **आपातकाल (1975)** विरोध के प्रतीक और **जनता पार्टी** की स्थापना के प्रेरणा-स्तंभ बने।

BPSC CONCEPT WALLAH

- आलोचना यह कि उनके विचार **आदर्शवादी** थे और उनमें **राजनीतिक व्यावहारिकता** की कमी देखी गई।
- फिर भी वे भारतीय राजनीति में **नैतिक विपक्ष** के अविभाज्य प्रतीक बने रहे।

4. महत्त्वपूर्ण कीवर्ड/शब्दावली:

- लोकनायक
- कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी
- आज़ाद दस्ता
- भूमिगत आंदोलन
- सम्पूर्ण क्रांति
- दल-विहीन/पार्टी-रहित लोकतंत्र
- सर्वोदय
- आपातकाल (1975)
- जेपी आंदोलन
- गांधीवादी समाजवाद

5. अन्य महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- उत्तर में **स्वतंत्रता संग्राम और स्वतंत्रता पश्चात योगदान** का संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।
- घटनाओं को **कालक्रमानुसार** प्रस्तुत कीजिए और **शीर्षकों** का प्रयोग कीजिए।
- ऐतिहासिक प्रमाणों, उद्धरणों और **जेपी के अपने विचारों** को संदर्भित कीजिए।
- उत्तर केवल भारत छोड़ो आंदोलन तक सीमित न हो — **1970 के दशक के आंदोलनों** को भी समान महत्त्व दीजिए।

प्रश्न: "1813 से 1947 तक बिहार में तकनीकी शिक्षा के ऐतिहासिक विकास की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिए। औपनिवेशिक शासन के दौरान इसने क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन को कैसे प्रभावित किया?"

1. प्रश्न की मुख्य माँग:

- **कालानुक्रमिक विश्लेषण** – 1813 से 1947 तक बिहार में पश्चिमी शिक्षा के क्रमिक विकास को रेखांकित कीजिए।
- **प्रमुख पड़ावों की पहचान** – उन संस्थानों, नीतियों और घटनाओं की चर्चा करें जिन्होंने इस विकास को प्रभावित किया।
- **प्रभाव का मूल्यांकन** – यह बताइए कि इस शिक्षा प्रणाली ने बिहार की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को कैसे बदला।

2. परिचय और निष्कर्ष में क्या शामिल करें:

परिचय में लिखें:

- बिहार की **प्राचीन शैक्षिक परंपरा** – नालंदा और विक्रमशिला जैसे संस्थानों का संक्षिप्त उल्लेख करें।
- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के तहत **पाश्चात्य/पश्चिमी शिक्षा के आगमन** की शुरुआत को स्पष्ट करें।

निष्कर्ष में लिखें:

- बिहार में पाश्चात्य/पश्चिमी शिक्षा के विकास की **मुख्य उपलब्धियों** और संस्थागत योगदानों का सार प्रस्तुत करें।
- यह दर्शाएं कि इस शिक्षा प्रणाली ने कैसे **नए सामाजिक वर्गों** को जन्म दिया और स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक बल प्रदान किया।

3. उत्तर में शामिल की जाने वाली मुख्य बातें:

A. प्रारंभिक प्रयास (1813–1857):

- **चार्टर एक्ट, 1813** – शिक्षा हेतु धन आवंटन का प्रावधान और **ओरिएंटलिस्ट बनाम एंग्लिसिस्ट विवाद** की शुरुआत।
- प्रारंभिक संस्थानों की स्थापना व प्रभाव – जैसे कलकत्ता मदरसा (1781), बनारस संस्कृत कॉलेज (1791) – जिन्होंने बिहार की शैक्षिक सोच को प्रभावित किया।

B. 1857 के बाद के विकास:

- **वुड्स डिस्पैच (1854)** – संगठित शिक्षा प्रणाली का प्रस्ताव और बिहार पर प्रभाव।
- प्रमुख संस्थानों की स्थापना:
  - **पटना कॉलेज (1863)** – उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी।
  - **बिहार स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग (1900)** – अब **एनआईटी पटना** के रूप में विख्यात।
  - **पटना विश्वविद्यालय (1917)** – भारतीय उपमहाद्वीप का सातवां सबसे पुराना विश्वविद्यालय।

C. विस्तार और विविधीकरण (1900–1947):

- **प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का प्रसार** – साक्षरता दर बढ़ाने हेतु विद्यालयों की स्थापना।
- **मिशनरियों और निजी संस्थाओं की भूमिका** – ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के प्रचार में योगदान।

D. सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव:

- **नए शिक्षित वर्ग का उदय** – प्रशासनिक पदों, सुधार आंदोलनों और प्रेस में इनकी भागीदारी।
- **सामाजिक सुधारों का माध्यम** – जातीय समानता, महिला शिक्षा, और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ चेतना का प्रसार।
- **स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी** – शिक्षित बिहारी वर्ग की बढ़ती राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व।

4. प्रमुख कीवर्ड/शब्दावली:

- चार्टर एक्ट, 1813
- ओरिएंटलिस्ट-एंग्लिसिस्ट विवाद
- मैकाले संस्मरण/मिनट (1835)
- वुड्स डिस्पैच (1854)
- पटना कॉलेज
- पटना विश्वविद्यालय
- अधोमुखी निस्यंदन का सिद्धांत/डाउनवर्ड फिल्ट्रेशन सिद्धांत
- बिहार स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग
- सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
- राष्ट्रवादी आंदोलन में भागीदारी

5. अन्य महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखें:

- **विभिन्न आंकड़ों और रिपोर्टों** का उपयोग करें – जैसे **एडम रिपोर्ट (1835)** का हवाला दे सकते हैं।
- **अन्य प्रांतों से तुलना** करें – उदाहरण स्वरूप बंगाल या बॉम्बे प्रेसीडेंसी के साथ।
- **आलोचनात्मक दृष्टिकोण** अपनाएँ – उपनिवेशीय शिक्षा व्यवस्था की सीमाएँ, जैसे कि **क्लेरिकल वर्ग तैयार करना**, भी बताएं।
- **महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों** का उल्लेख करें – जैसे **राजा राममोहन राय**, जिन्होंने पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन किया।

BPSC CONCEPT WALLAH